E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

इन्द्र देवता का परिचय

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

इन्द्र ऋग्वेद के सर्वाधिक लोकप्रिय और महत्त्वपूर्ण देवता हैं। इन्द्र वैदिक आर्यों के प्रमुख राष्ट्रीय देवता हैं। ऋग्वेद के २५० सूक्तों में इन्द्र की स्तुति स्वतन्त्र रूप में की गयी है तथा ५० सूक्तों में अन्य देवताओं के साथ भी उसे स्तुत किया गया है। इस प्रकार ऋग्वेद का लगभग चतुर्थांश इन्द्र के ही गुणगानों से भरा हुआ है। इन्द्र की प्रसिद्धि उनकी अपरिमित अजेयता, वीरता, सार्वभौमिकता एवं ज्ञान आदि की पराकाष्ठा के सारभूत तत्त्वों की अधिकता के कारण ही रही। इसी कारण उनका चरित्र आज भी एक उल्लेखनीय व्यक्तित्व के रूप में उपस्थित है। उनकी लोकप्रियता को बनाए रखने में उनके चरित्र का विशेष योगदान रहा है, जिसके कारणस्वरूप वे आज भी एक महान् देवता के रूप में जाने जाते हैं। जिस प्रकार अग्नि और सूर्य क्रमशः पृथिवीलोक एवं द्युलोक के अधिपति हैं, उसी प्रकार इन्द्र अन्तरिक्षलोक के अधिपति हैं। इन्द्र देवता की कतिपय विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

स्वरूप- ऋग्वेद में इन्द्र का चित्रण मानवाकृति रूप में किया गया है। उसके विशाल शरीर, शीर्ष, भुजाओं एवं बड़े उदर का उल्लेख अनेक बार किया गया है। उसके जबड़ों एवं अधरों का भी उल्लेख प्राप्त होता है। वह भूरे-वर्ण का देव है। यहाँ तक कि उसके केश एवं दाढ़ी भी भूरे वर्ण के ही हैं। उसका मुख सुन्दर है। उसकी भुजाएँ भी वज्रवत् पुष्ट एवं कठोर हैं। वह सात रश्मियों (किरणों) से युक्त है।

जन्म एवं देवताओं से सम्बन्ध- ऋग्वेद के सम्पूर्ण दो सूक्तों में इन्द्र के जन्म के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों को बतलाया गया है। निर्ऋति तथा शवसी नामक गाय को उनकी माँ कहा गया है। उनके पिता द्यौः या त्वष्टा है। एक स्थल पर इन्द्र को सोम से उत्पन्न कहा गया है। अग्नि और पूषन् इनके भाई हैं।

इन्द्राणी पत्नी और मरुद्गण मित्र तथा सहायक हैं। इन्द्र को वरुण, वायु, सोम, बृहस्पति, पूषन् और विष्णु के साथ युग्म रूप में भी स्तुत किया गया है।

कार्य– इन्द्र ने जन्म लेते ही समस्त देवताओं को अपने पराक्रम से आक्रान्त कर दिया। इनके पौरुष की महिमा से द्युलोक एवं पृथिवी-लोक काँप गये। ये आर्यों को अनार्यों के विरुद्ध युद्ध में सहायता प्रदान करके विजयी बनाते हैं। इसीलिए वह अपने अपूजकों और विरोधियों का वध करते हैं। इन्द्र अपने भक्तों की रक्षा एवं सहायता करते हैं। इन्द्र ने अस्थिर पृथिवी को स्थैर्य प्रदान किया। इधर-उधर उड़ते हुए पर्वतों का पङ्ख छेदन करके उन्हें तत्तत् स्थानों पर प्रस्थापित किया। उसने द्युलोक को भी स्तब्ध किया है। इस प्रकार उसने अन्तरिक्ष का भी निर्माण किया है। दो मेघों या पत्थरों के मध्य से अग्नि को भी इन्द्र ने ही उत्पन्न किया है। उसने ही सूर्य एवं उषस् को भी उत्पन्न किया है। उसने बल का प्रदर्शन करते हुए अहि को मारकर सात नदियों को प्रवाहित होने के लिए उन्मुक्त किया है। इन्द्र ने भयवशात् पर्वतों में छिपे हुए शम्बर नामक असुर को ४० वें वर्ष में ढूंढ निकाला और उसका वध कर दिया। इन्द्र ने बल नामक राक्षस के बाड़े से गायों को बाहर निकाला था। स्वर्ग में चढ़ते हुए रौहिण नामक असुर को अपने शरु नामक वज्र से मार डाला था। इन्द्र का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य वृत्रवध है। वृत्रवध की गाथाओं से इन्द्र-सूक्त भरे पड़े हैं। इस गाथा के वर्णन से ऋषि अघाते नहीं। इन्द्र ने सोमरस का पान करने का तो मानो व्रत ही ले लिया है। सोम-लता को पीसने, निचोड़ने एवं पकाने वाले की वह रक्षा करता है। सोमरस के पान-कर्ता के रूप में इन्द्र वैदिक देवताओं में अपना उपमान नहीं रखता। अचल या अनश्वर पदार्थों को चल या नश्वर बनाना भी इन्द्र के ही वश में है। इसीलिए तो योद्धागण अपनी विजय के लिए इन्द्र का आवाहन करते हैं।

प्राकृतिक आधार- अनेक वैदिक विद्वान् इन्द्र को प्रकाश का देवता मानकर उनको सूर्य के साथ समीकृत करते हैं। लोकमान्य तिलक वृत्र को हिम का प्रतीक मान हैं जिसे इन्द्र अर्थात् सूर्य नष्ट करता है। उनके अनुसार आर्यों के आदि देश उत्तर-ध्रुव में शीतऋतु में सभी नदियों की धाराएँ जल के अभाव के कारण रुक जाती है। वसन्त का सूर्य ही बर्फी को पिघलाकर जलधाराओं को प्रवाहित करता है। भारतीय परम्परा भी बादलों के पारस्परिक टकराव से उत्पन्न प्रकाश (विद्युत्) को ही इन्द्र का वज्र

स्वीकार करती है। चमक के कारण बादलों का क्षरण होता है जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि बादल इन्द्र के वज्र से आहत होकर आँसू गिराते हैं। ये बादल ही वृत्र हैं। आवरणार्थक 'वृञ्' धातु से निष्पन्न 'वृत्र' शब्द का अर्थ है आवरक या आच्छादक। 'वृत्र' को मेघ मानने पर भी इन्द्र की सूर्यरूपता स्पष्टताः बनी रहती है। अनेक स्थलों पर मरुतों की सहायता से इन्द्र द्वारा वृत्र-वध होने का भी उल्लेख प्राप्त होता है। इस कथन से भी यही स्पष्ट होता है कि सूर्य की गर्मी से मरुत् (वायु) गर्म होकर ऊपर उठता है, जिससे वर्षा होती है। वेदों में 'गौः' 'गावः' इत्यादि शब्दों का अर्थ 'किरणें' भी हैं। सभी दिशाओं में इन्द्र अर्थात् सूर्य की ही किरणें व्याप्त हो रही हैं। पृथिवी एवं द्युलोक इन्द्र (= सूर्य) के प्रति झुक जाते हैं, इस कथन का भी तात्पर्य यही हो सकता है कि सूर्य के चारों ओर पृथिवी चक्कर लगाती है तथा द्युलोक भी सूर्य के प्रकाश से ही प्रकाशित होता है।

इन्द्र शत्रुसंहारक रूपमें- ऋग्वेद में इन्द्र को वृत्रासुर का विनाशक, शत्रुपुरी का विध्वंसक, शम्बर नामक दैत्य के पुरों का नाश करनेवाला, रथियों में सर्वश्रेष्ठ, वाजिपतियों का स्वामी, दुष्ट-दलनकर्ता, शत्रुओं को पर्वत की गुफाओं में खदेड़नेवाला तथा वीरों के साथ युद्ध में विजयी बतलाया गया है। वहाँ ऐसा भी उल्लेख है कि इन्द्र मात्र अपने आयुध वज्र से ही सम्पूर्ण शत्रुओं को पराजित करने की अद्भुत क्षमता रखते हैं। परंतु अथर्ववेदके एक स्थानपर वज्रके आयुध के स्थान पर हाथों में बाण एवं तरकस लेकर उनके युद्ध करने का उल्लेख भी मिलता है। ब्राह्मणग्रन्थों में इन्द्र को वृत्रासुर नामक दैत्य का नाश करनेवाला, नमुचि नामक दैत्य का संहार करनेवाला, महान् बलवान् तथा देवताओं में अत्यन्त बलशाली कहा गया है। इन्हें त्वष्टा के पुत्र विश्वरूप का, जिसके तीन मस्तक थे, वज्र द्वारा संहार करने वाला कहा गया है। इन्द्र ने आश्रमोचित आचरणसे भ्रष्ट अनेक संन्यासियों के अङ्गभङ्ग कर उनके टुकड़े शृगालों को बाँट दिये थे। उन्हें प्रह्लादके परिचारक दैत्यों को मौत के घाट उतारनेवाला भी कहा गया है। इसी प्रकार इन्हें पुलोमासुरके परिचायक दानवों तथा पृथ्वीपर रहनेवाले कालकाश्य नामक दैत्यका संहार करनेवाला भी कहा गया है। युद्धके देवताके रूप में, शत्रु को पराजित करनेवाले स्वरूप को व्यक्ति पूजते थे तथा कामना करते थे कि इन्द्र उन्हें उनके शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध में विजय प्राप्त

कराते। वैदिक साहित्य में इन्द्र की राष्ट्रिय देवता या युद्ध के देवताके रूपमें ख्याति सतत बनी हुई देखी जा सकती है।

इन्द्र महान् सत्ताधारी रूप में- ऋग्वेद में इन्द्र के प्रभाव को आकाश से भी अधिक श्रेष्ठ, उनकी महिमा को पृथ्वीसे भी अधिक विस्तीर्ण तथा भीषण, बल में सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। उल्लेख है कि उन्होंने आकाश में द्युलोकको स्थिर किया। द्यावा-पृथ्वी-अन्तरिक्ष को अपने तेज से पूर्ण किया तथा विस्तीर्ण पृथ्वी को धारण कर उसको प्रसिद्ध किया। इसी प्रकार ब्राह्मणग्रन्थों में इन्द्र को सूर्य, वाणी तथा मन का राजा कहा गया है। उपनिषदों में इन्द्र को अन्य देवताओंसे को श्रेष्ठ कहा गया है। स्वरों को इन्द्र की आत्मा तथा प्राण को स्वयं इन्द्र कहा गया है। इन्द्रके आश्रित होकर में ही समस्त रुद्रगण जीवन धारण करते हैं। इन्द्र को स्पष्टरूप से देवता मानते हुए उनकी स्तुति करनेका निर्देश दिया गया है। गर्भाधानके समय इन्द्र को देवता मानते हुए उनका यजन करनेका उल्लेख है। देवलोक को इन्द्रलोक से ओतप्रोत बताते हुए कहा गया है कि दक्षिण क्षेत्र में विद्यमान पुरुष इन्द्र ही है। इन्द्र को आत्मा, ब्रह्मा एवं सर्वदेवमय कहा गया है। इन्द्र का प्रिय धाम स्वर्ग है तथा वायुमण्डल में विद्यमान पुरुष भी इन्द्र ही है। इस प्रकार इन्द्र महान् सत्ताधारी के रूप में सार्वभौमिक स्वरूप को अग्रसर करते हुए अपनी सत्ता को विद्यमान रखने में पूर्णरूप से सफल रहे। वैदिक काल में उनकी सत्ता, प्रभुता एवं सम्पन्नता निश्चितरूप से उनकी सार्वभौमिकता को प्रस्तुत करती है। उनका प्रत्येक स्थलपर उपस्थित रहना, सर्वत्र विद्यमान रहना, निश्चितरूप से उनकी लोकप्रियता को प्रस्तुत करता है।

इन्द्र महाप्रज्ञावान् रूपमें– ऋग्वेदमें इन्द्रकी बुद्धि की प्रशंसा की गयी है। ब्राह्मणग्रन्थों में इन्द्र को श्रुति एवं वीर्य कहा गया है। पाणिनिने अपने 'अष्टाध्यायी' में इन्द्र को इन्द्रियों का शासक बताते हुए कहा कि इन्द्र से ही इन्द्रियों को शक्ति मिलती है। उपनिषदों के अनुसार इन्द्र ने प्रजापति के समीप वर्षों तक ब्रह्मचर्यपूर्वक वास करते हुए ज्ञान प्राप्त किया था।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि वैदिक देवताओं में इन्द्र का स्थान सर्वोपरि हैं। इसीलिए परवर्ती साहित्य में इन्द्र को देवताओं का राजा माना गया है तथा अनेक पौराणिक ग्रन्थों में इन्द्र वर्षा कराने वाले देवता के रूप में विख्यात हैं।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi